

डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो, दस आज्ञाएँ, सत्र 6: आज्ञा 5 - माता-पिता को उनके स्थान पर रखना

यह डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो और दस आज्ञाओं पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 6 है, आज्ञा 5: माता-पिता को उनके स्थान पर रखना।

और यह हमें अब पाँचवीं आज्ञा तक ले आता है, जहाँ हम यह परिवर्तन करना शुरू कर रहे हैं।

हमने ईश्वर के प्रति मनुष्य के दायित्वों के बारे में आज्ञाओं से शुरुआत की। फिर हमारे पास सप्ताह के दिन इस तरह की व्यापक आज्ञा है, जो पर्यावरण के बारे में बात करती है। अब हम साथी मनुष्यों के प्रति अपने दायित्वों की ओर बढ़ रहे हैं।

और हम कहाँ से शुरू करें? हम माता-पिता को उनकी जगह पर रखते हैं, और वे हमारे साथी मनुष्यों के प्रति हमारी जिम्मेदारियों की सूची में सबसे ऊपर आते हैं। मुझे लगता है कि हमारे समय और युग में यह एक बहुत ही उपयुक्त विषय है। मुझे लगता है कि हमारे समाज और माता-पिता के प्रति हमारा दृष्टिकोण बदल रहा है।

आप 1950 और शायद 1960 के दशक के बारे में सोचिए। और हमारे पास एक बुद्धिमान पिता है जो सबसे अच्छा जानता है, जो हमें बता सकता है कि हमें अपना जीवन कैसे जीना चाहिए और हमें बुद्धिमानी भरी सलाह दे सकता है। लेकिन अब, बेशक, हमारे पास एक ऐसा पिता है जो कुछ भी नहीं जानता और होमर सिम्पसन, जिसका उसके बच्चों द्वारा अनादर किया जाता है और उसके बॉस द्वारा उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है, और कुल मिलाकर वह एक पूरी तरह से असफल व्यक्ति जैसा चरित्र प्रतीत होता है।

और, वैसे, अगर आपको लगता है कि विज्ञापनों में पिताओं का प्रदर्शन अच्छा नहीं है, और शायद यह पहले जितना नहीं है। अध्ययनों से पता चला है कि ऐसा होता है कि पिता या पतियों को आम तौर पर मूर्ख के रूप में दिखाया जाता है, और उनकी पत्नियाँ या उनके बच्चे लगातार उनसे ज़्यादा होशियार होते हैं। तो, और यह एक मज़ेदार बात है, क्योंकि, ज़ाहिर है, अब हम ऐसे समय में रह रहे हैं जब अधिकार का अनादर किया जाता है, और माता-पिता से ज़्यादा अधिकार का प्रतिनिधित्व कौन कर सकता है।

तो, हाँ, दस आज्ञाओं को देखते हुए तीन आज्ञाएँ ईश्वर के बारे में बात करती हैं, एक जो न केवल ईश्वर के बारे में बात करती है, बल्कि पर्यावरण के बारे में भी, और कुछ हद तक हमारे साथी मनुष्यों के बारे में, और बहुत व्यापक रूप से सप्ताह दिवस की आज्ञा के बारे में। अब हम यहाँ कई आज्ञाओं पर आगे बढ़ रहे हैं जो सीधे तौर पर संबोधित करेंगे कि हम साथी मनुष्यों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। एक दिलचस्प बात यह है कि यह हत्या से शुरू नहीं होती है, जो कि शुरू करने के लिए सबसे स्पष्ट स्थान प्रतीत होता है।

आप जानते हैं, आपको किसी का प्रतिनिधित्व करना होगा या किसी और के जीने के अधिकार का सम्मान करना होगा, तभी आप उनकी अपनी संपत्ति के अधिकार का सम्मान कर सकते हैं।

लेकिन बाइबल यहीं से शुरू नहीं होती। यह इस एस कमांड से शुरू होती है, जो सबसे पहले एक सकारात्मक कमांड है, आप जानते हैं, और आने वाली सभी नकारात्मक कमांड से अलग, यह एक सकारात्मक कमांड है।

और ऐसा लगता है कि यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में हमारे समाज में शायद बहुत कम सोचा जाएगा, और पिता और माता का सम्मान करने के विचार को बहुत कम महत्व दिया जाएगा। आप सोच सकते हैं कि क्या भगवान भविष्य में 3500 साल पहले नहीं देख रहे थे, यह जानते हुए कि क्या होने वाला है, और होमर सिम्पसन ने हमें दस आज़ाओं में यह आदेश दिया था। लेकिन यह बस एक अजीब जगह लगती है।

तो, इस आज़ा के बारे में कुछ बड़े सवाल हैं जिनके बारे में हम सोच सकते हैं। सबसे पहले, बेशक, सम्मान से हमारा क्या मतलब है? मान लीजिए कि हम इन दस आज़ाओं में से कुछ की अस्पष्टता के बारे में बात करेंगे। हम माता-पिता का सम्मान कैसे करते हैं? और यहाँ एक और बड़ा सवाल है, माता-पिता का सम्मान क्यों? यह दिलचस्प है, कई साल पहले, जब मैं दस आज़ाओं पर कुछ शोध कर रहा था, तो एक टिप्पणी, एक पादरी टिप्पणी, जिसमें उन्होंने पहली टिप्पणी की, इस विशेष आज़ा के बारे में उन्होंने जो पहला अवलोकन किया, वह यह था कि अगर यह हमारे दिन और युग में लिखा गया होता, तो शायद यह कुछ और कहता कि माता-पिता अपने बच्चों का सम्मान करें।

और, आप जानते हैं, उस टिप्पणी को पढ़कर, ऐसा लगा जैसे लेखक यह कहना चाह रहा था कि हम ऐसे समय में जी रहे हैं जब बच्चों को उचित सम्मान नहीं मिल रहा है। और इसलिए हमें बच्चों का सम्मान करना चाहिए। और मैं इस बात से बहुत परेशान था कि किसी को इस बात की समझ नहीं है कि सम्मान का क्या मतलब है और प्राचीन दुनिया में सम्मान का क्या महत्व था, और कोई उनके हाथ में कलम थमाकर उनसे अनुबंध लिखवा रहा है और उन्हें टिप्पणी लिखने दे रहा है।

स्पष्ट रूप से, उस व्यक्ति ने उचित पृष्ठभूमि कार्य नहीं किया था। और फिर, बेशक, एक और बड़ा सवाल यह है कि सम्मान कैसे प्रकट किया जाना चाहिए? यह कैसे है कि हमें अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए? इस आज़ा की इस टिप्पणी की एक दिलचस्प विशेषता यह है कि इसमें एक धमकी भी शामिल है। आप जानते हैं, नए नियम में, सेंट पॉल इसे वादे के साथ पहली आज़ा कहते हैं।

आप जानते हैं, अपने सम्मान का सम्मान करें, अपने पिता और माताओं का सम्मान करें ताकि आप उस देश में लंबे समय तक रह सकें जो प्रभु आपका परमेश्वर आपको दे रहा है। खैर, वास्तव में, यह एक निहित धमकी की तरह है, क्योंकि, निश्चित रूप से, इसका विपरीत, मुझे लगता है, अगर आप अपने पिता और माता का सम्मान नहीं करते हैं, तो आप उस देश में लंबे समय तक नहीं रह पाएंगे जो प्रभु आपका परमेश्वर आपको दे रहा है। तो निश्चित रूप से वहाँ निहितार्थ है कि यदि आप ऐसा नहीं करते हैं तो भगवान आपको एक विशेष दंड दे सकते हैं।

और यह पहली बार है, पहली बार जब इस तरह की बात का उल्लेख दस आज़ाओं में किया गया है। अब, हम जानते हैं कि भविष्यवक्ताओं और ऐतिहासिक पुस्तकों में, जैसा कि इसे कहा जाता

है, व्यवस्थाविवरणवादी इतिहास में, मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा पर बहुत ज़ोर दिया गया है, और माता-पिता के सम्मान के बारे में इतना नहीं। और जिस कारण से इस्राएलियों को देश से बाहर निकाल दिया गया था, वह मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा के कारण था।

लेकिन यहाँ दस आज्ञाओं में, हम माता-पिता का सम्मान न करने से जुड़ी हुई निहित धमकी देखते हैं। और इसलिए यह एक दिलचस्प सवाल है। यहाँ क्यों? इस आज्ञा के साथ, वह धमकी क्यों लाई गई है, जो निश्चित रूप से उस समय की भविष्यवाणी करती है जब इस्राएल के लोगों को उनकी भूमि से बाहर निकाल दिया जाएगा और निर्वासन में ले जाया जाएगा।

इसलिए इस आज्ञा की सराहना करने के लिए हमें जो बातें समझने की ज़रूरत है, उनमें से एक है सम्मान और शर्म की संस्कृति और योग्यता या अपराध की संस्कृति के बीच अंतर को पहचानना। सम्मान और शर्म की संस्कृतियों और अपराध की संस्कृतियों के बीच अंतर, मैं यहाँ योग्यता शब्द का भी उपयोग करता हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि यह इस संदर्भ में अच्छी तरह से फिट बैठता है। लेकिन मानवविज्ञानियों द्वारा इस पर व्यापक रूप से खोज की गई है और यह महान शोध का क्षेत्र बन गया है।

पश्चिमी संस्कृतियाँ, हममें से ज्यादातर लोग जो यहाँ पश्चिमी संस्कृति में हैं, हममें से ज्यादातर जो अंग्रेज़ी बोलते हैं, पश्चिमी संस्कृति का हिस्सा हैं, हम योग्यता और दोष के विचारों की ओर झुकाव रखते हैं। इसका क्या मतलब है? खैर, योग्यता अच्छे कामों से हासिल होती है, आप जानते हैं, योग्यता अच्छे काम करके अर्जित की जाती है। और जो उपलब्धियाँ हम हासिल करते हैं, उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा, और हमें अपने समाज में प्रतिष्ठा मिलेगी।

अपराधबोध एक आंतरिक भावना है कि आपने कुछ गलत किया है, कुछ ऐसा जो आपको नहीं करना चाहिए था, या शायद कुछ ऐसा करने में विफल रहे जो आपको करना चाहिए था। अपराधबोध आंतरिक रूप से निर्देशित होता है। आम तौर पर, हम दोषी महसूस कर सकते हैं, भले ही कोई भी यह न जानता हो कि हमने जो किया है वह गलत है।

और इसलिए हमारे पश्चिमी समाज में बहुत से लोग उन मामलों के बारे में अपराधबोध के मुद्दों से निपटते हैं जो निजी और गुप्त हैं, जिनके बारे में कोई नहीं जानता। यह पूर्वी संस्कृति से काफी अलग है, जो अपराधबोध और योग्यता अक्ष के बजाय सम्मान और शर्म की धुरी की ओर अधिक झुकाव रखती है। सम्मान एक सार्वजनिक चेहरा है जो आपके कार्यों और आपकी स्थिति दोनों से प्राप्त होता है।

इसलिए, अगर कोई व्यक्ति कोई विशेष रूप से सराहनीय काम करता है, और उसे लोगों द्वारा मान्यता दी जाती है, तो उसे सम्मान मिलता है। अगर कोई व्यक्ति एक निश्चित आयु तक पहुँच जाता है, तो उसे एक निश्चित मात्रा में सम्मान दिया जाना चाहिए। अगर उसे कोई पद मिलता है, तो उसे एक निश्चित मात्रा में सम्मान दिया जाना चाहिए।

उन समाजों में जो सम्मान और शर्म की धारणा से प्रेरित हैं, हर कोई जानता है कि उन्हें किस तरह का सम्मान मिलना चाहिए, उन्हें किस तरह से सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया जाना

चाहिए। आप जानते हैं, यह एस्तेर की पुस्तक में एक तरह का प्रेरक विषय है, बेशक, यह है कि हामान, जो फारसी साम्राज्य का वज़ीर बन गया है, एक निश्चित मात्रा में सार्वजनिक मान्यता प्राप्त करने की उम्मीद कर रहा है। और फिर आपके पास यह आदमी मोर्दकै है, जो हामान को सम्मान देने से इनकार कर रहा है जैसा कि वह सम्मान पाने की उम्मीद करता है।

अब, व्यक्तिगत रूप से, मैं यहाँ थोड़ा अल्पसंख्यक हो सकता हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि मोर्दकै गलत था। उस समाज में, उन दिनों, एक व्यक्ति जिसने हामान को जो पद प्राप्त किया था, चाहे आप उसे पसंद करें या न करें, अप्रासंगिक था। बात यह थी कि, उसका पद एक निश्चित मात्रा में सम्मान की मांग करता था।

और उसे यह सम्मान देने से मना करना मुसीबत को आमंत्रित करना था। और, बेशक, मोर्दकै को यह भरपूर मिला। इसलिए, सम्मान आपके कार्यों, आपके द्वारा किए गए कामों के साथ-साथ आपकी स्थिति, समाज में आपके द्वारा खुद को पाए जाने वाले स्थान से भी प्राप्त होता है।

शर्म का मतलब है सार्वजनिक सम्मान से वंचित होना। इसलिए, यह अपराध बोध से अलग है। अपराध बोध एक आंतरिक चीज़ और रहस्य है।

शर्म एक सार्वजनिक चीज़ है। शर्म तब आती है जब आपके द्वारा किए गए किसी काम या आपके करीबी लोगों द्वारा किए गए किसी काम के कारण आपका सम्मान खो जाता है, या जब कोई ऐसा व्यक्ति आपको सम्मान देने से इनकार कर देता है जो आपको सम्मान देने से इनकार कर देता है, जैसा कि मोर्दकै ने हामान को वह सम्मान देने से इनकार कर दिया जो उसके पद के लिए वास्तव में ज़रूरी था। तो हाँ, पारंपरिक संस्कृतियों में, हर कोई अपनी जगह जानता है।

हर कोई जानता है कि उनके पास जो सम्मान है उसके आधार पर उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए। इसलिए, हमारे समाज में, पश्चिमी समाज में, सम्मान की हमारी समझ वास्तव में कई पूर्वी संस्कृतियों में मौजूद सम्मान की अवधारणा की तुलना में काफी उथली है। वैसे, सम्मान के लिए हिब्रू शब्द कावोद या कबेड , किसी का सम्मान करने के लिए, किसी चीज़ को महत्वपूर्ण या भारी मानना है।

और हम अपने समाज में भी कुछ ऐसा ही करते हैं। हम ऐसे व्यक्ति के बारे में बात करते हैं जिसे सम्मान देना ज़रूरी है। हम उन्हें हैवीवेट कहते हैं।

तो, वहाँ भी इसी तरह की कल्पना का उपयोग किया गया है। लेकिन सम्मान इस बात से जुड़ा होगा कि कोई व्यक्ति कौन है, यहाँ तक कि किसी ने क्या किया है, उससे भी ज़्यादा। इसलिए अगर कोई व्यक्ति इतना लंबा जीवन जीता है कि वह एक बुजुर्ग बन जाए, तो उसे सम्मान मिलेगा।

उन्हें बस इतना करना था कि वे मरें नहीं, जो कि एक तरह से अच्छा है। लेकिन हाँ, जाहिर है, आपके पास कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो युद्ध नायक हो या ऐसा कुछ हो जो उन्हें एक निश्चित मात्रा में सम्मान दिला सके। कोई ऐसा व्यक्ति जो एक अच्छी शादी या एक अच्छा विवाह या ऐसा कुछ प्राप्त करता हो।

और ये चीजें समाज में आपकी जगह तय करेंगी। अगर आपका परिवार कई वजहों से सम्माननीय था, जैसे कि उनके अच्छे वंश या उनके पूर्वजों ने कुछ किया था, तो आप एक अच्छी शादी की उम्मीद कर सकते हैं क्योंकि आप किसी ऐसे व्यक्ति से शादी करेंगे जिसका सम्मान भी उतना ही होगा, सार्वजनिक मान्यता भी उतनी ही होगी। तो अगर, दूसरी तरफ, किसी ने खुद को या अपने परिवार को शर्मसार किया है, तो उनकी शादी की संभावनाएं, नौकरी और पद की उनकी संभावनाएं, ये सब, ज़ाहिर है, खराब होने वाली हैं।

सम्मान व्यक्ति को विशेषाधिकार दिलाएगा। मेज पर सम्मान का स्थान, यीशु ने अपने एक दृष्टांत में इसके बारे में बात की है, है न? कि जिस व्यक्ति को मेज़बान के दाहिने हाथ पर सीट दी जाती है, उसे विशेष सम्मान दिया जाता है, जो उसके पद की सार्वजनिक स्वीकृति है। बेशक, प्राचीन दुनिया के कई लोगों के लिए और यहाँ तक कि हमारे समय के लिए भी, एक महत्वपूर्ण मुद्दा, जो हमें कुछ सुखियाँ पढ़ने में मदद करने के लिए भी महत्वपूर्ण है, वह यह तथ्य है कि सम्मान को जीवन से भी अधिक महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

सचमुच, जब हम अपमान से पहले मृत्यु सुनते हैं, तो हम क्लिंगन या शायद प्राचीन स्पार्टन्स या उस तरह के किसी व्यक्ति के बारे में सोच सकते हैं। यह विचार कि कोई व्यक्ति खुद को शर्मिंदा करेगा, न केवल खुद के लिए, बल्कि उसके बच्चों, उसके पोते-पोतियों, शायद पीढ़ियों तक उसके परिवार के लिए भी परिणाम होगा। और इसलिए अपमान से पहले मृत्यु उन दिनों लोगों के लिए एक बहुत ही वास्तविक तरह का विचार था, कि अपने जीवन को बनाए रखने की तुलना में अपने सम्मान को बनाए रखना अधिक महत्वपूर्ण था।

तो, अपराध और योग्यता की हमारी समझ से काफी अलग, आप जानते हैं? हमारे समाज में, अगर हमने एक निश्चित मात्रा में योग्यता हासिल की है, तो हम उम्मीद करते हैं कि हम इसका आनंद ले पाएंगे, आप जानते हैं? अगर हम एक निश्चित मात्रा में अपराध महसूस कर रहे हैं, तो, अक्सर हम बस इससे निपट लेंगे। हम इसे सहन करेंगे, शायद कुछ परामर्श या कुछ और करवाएंगे। लेकिन यह विचार कि हम किसी सार्वजनिक घोटाले के कारण अपनी जान ले लेंगे, जो हमारे समाज में सुखियाँ बनता है।

कुछ अन्य समाजों और अन्य प्रकार की संस्कृतियों में, इसे स्वीकार किया जाएगा और इसकी अपेक्षा की जाएगी। कुछ साल पहले मैंने एक दिलचस्प मामला देखा था, मुझे लगता है कि यह था, मुबीन राहु ने अपनी 18 वर्षीय बहन को गोली मार दी। क्यों? क्योंकि उसने एक ईसाई से शादी की थी।

अब परिवार क्या सोचेगा? उनके पिता और माता को अभी-अभी एक बेटी से वंचित किया गया है, और उनके बेटे को जेल की सज़ा सुनाई जा रही है और उनसे दूर ले जाया जा रहा है। माता-पिता ने क्या कहा? उल्लेखनीय रूप से, पिता ने कहा, मेरा परिवार नष्ट हो गया। क्यों? बेटे की वजह से? मरने के बाद भी, मैं इस शर्मनाक लड़की की वजह से नष्ट हो जाऊंगा।

उसकी बेटी ने ही उसके परिवार को नष्ट किया, न कि उसके बेटे ने, जिसने उसकी बहन को मार डाला। नहीं, उसके बेटे ने सम्मानजनक काम किया क्योंकि उसकी बेटी ने परिवार को बदनाम किया था। यह सिर्फ़ मुसलमानों की बात नहीं है; हम इसे ऐसा कुछ मानते हैं जो शायद मुसलमान करते होंगे, लेकिन नहीं, यह सम्मान और शर्म वाले समाजों की खासियत है।

के लिए या तो खुद के लिए मौत या फिर हत्या का चुनाव करना बिल्कुल भी असामान्य नहीं था। एक परिवार को उन पर आई शर्म के कारण कई पीढ़ियों तक इसकी कीमत चुकानी पड़ सकती है। तो फिर, पारंपरिक संस्कृतियों में सम्मान और शर्म की इस समझ के साथ माता-पिता का सम्मान करने का क्या मतलब है? इससे हमें इस पाँचवीं आज्ञा के अर्थ पर थोड़ा प्रकाश डालने में मदद मिल सकती है।

अपने माता-पिता का सम्मान करने का मतलब है उनके साथ वैसा व्यवहार करना जैसा कि उनकी स्थिति की मांग है। माता-पिता, अपनी भूमिका और समाज में अपने स्थान के कारण, अप्रासंगिक हैं यदि वे अच्छे माता-पिता हैं, अप्रासंगिक हैं यदि वे बुरे माता-पिता हैं, माता-पिता के रूप में, परिवार और समाज में उनकी भूमिका के कारण उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए, उनका सम्मान कैसे किया जाना चाहिए, इस बारे में कुछ अपेक्षाएँ हैं। तो, माता-पिता क्यों? हम यहाँ माता-पिता को अलग क्यों कर रहे हैं? क्यों नहीं कहा जाता है, अपने राजा का सम्मान करो या ऐसा कुछ, बजाय इसके कि क्यों, विशेष रूप से माता-पिता? जाहिर है, प्राचीन दुनिया में अधिकार के पदों पर बहुत से लोग थे, और ऐसे लोग जो खुद को सम्मान के योग्य मान सकते थे।

तो अब हम माता-पिता का सम्मान करने पर विशेष रूप से क्यों ध्यान दे रहे हैं? मुझे लगता है कि इसके लिए कुछ अच्छे स्पष्टीकरण हैं। इनमें से कुछ वास्तव में बाइबल द्वारा समर्थित हैं, कुछ मेरी अपनी राय है, लेकिन मुझे लगता है कि वास्तव में यहाँ एक प्रमुख मुद्दा यह है कि मनुष्य के रूप में, इस दुनिया में हम जिन लोगों से सबसे पहले मिलते हैं, जो हमें जीवन देते हैं, वे हमारे माता-पिता हैं। और इस अर्थ में, हमारे माता-पिता न केवल हमें जीवन देते हैं, बल्कि वे हमारी रक्षा करते हैं, हमारा पालन-पोषण करते हैं, हमें खाना खिलाते हैं, हमारी देखभाल करते हैं, और इन अर्थों में हमारे माता-पिता सबसे अधिक ईश्वर-समान लोग हैं, जहाँ तक उनका हम पर प्रभाव है, जिसका हम इस दुनिया में सामना करने जा रहे हैं।

वे एक तरह से भगवान के प्रतिनिधि हैं। भले ही वे जरूरी रूप से महान माता-पिता या महान व्यक्ति न हों, हमारे जीवन में उनकी भूमिका आदर्श रूप से उस भूमिका के समान ही है जो भगवान की हमारे जीवन में होनी चाहिए जब हम बड़े हो जाएं और स्वतंत्र हो जाएं। इसलिए, मेरा मानना है कि हमारे माता-पिता ही कारण हैं कि वे इस स्थिति में हैं, दस आज्ञाओं में, उन लोगों की सूची में सबसे ऊपर हैं जिन्हें हमें विभिन्न प्रकार का सम्मान देना चाहिए, मैं वास्तव में मानता हूँ कि वे वहाँ इसलिए हैं क्योंकि उनका गहरा प्रभाव है और हमारे मानव समाज और मानवीय संबंधों में उनकी ईश्वर जैसी भूमिका है।

आप जानते हैं, बाइबल में भगवान को अक्सर हमारे पिता और कभी-कभी हमारी माँ के रूप में संदर्भित करने का एक कारण है। माता-पिता हमारे लिए जो कुछ भी करते हैं, उसके साथ आप

लगभग यह सोचेंगे कि उस स्थिति के कारण हमें उन्हें सम्मान देना स्वाभाविक रूप से पसंद आएगा। तो फिर सम्मान कैसे प्रदर्शित किया जाए? फिर, हम इस सम्मान को कैसे पूरा करते हैं? और यहाँ एक और अस्पष्टता है जिसे बाद में स्पष्ट किया जाएगा।

खैर, कुछ हद तक, यह रिश्ते पर निर्भर करेगा। और बच्चों के लिए, आप जानते हैं, इसका मतलब आज्ञाकारिता होगा। और यह एक ऐसी बात है जिसे पुराने नियम और नए नियम दोनों में स्पष्ट किया गया है।

कहने से ज़्यादा आसान कुछ और हो सकता है। आप जानते हैं, चलो, पापा।

चलो, माँ। कई साल पहले मैंने एक कहानी सुनी थी कि एक आदमी था जिसने अपने दफ़्तर में लॉटरी जीती थी, और उसने एक वीडियो गेम जीता था। खैर, उसके घर पर तीन बच्चे हैं, और वह जानता है कि वह उन तीनों को वीडियो गेम नहीं दे सकता।

वह इसे उनमें से किसी एक को देना चाहता है, उम्मीद है कि वे इसे साझा करेंगे। लेकिन उसे लगता है कि यह अपने बच्चों को सबक सिखाने का एक अच्छा अवसर है। और इसलिए वह यह वीडियो गेम लेकर घर आता है।

बच्चे इसे देखते हैं। अब, ज़ाहिर है, वे उत्साहित हैं। और वह कहता है, आप जानते हैं, मैं इस वीडियो गेम को उस बच्चे को इनाम के रूप में देने जा रहा हूँ, जो हमेशा परिवार में सबसे आज्ञाकारी बच्चा होता है।

और तीनों बच्चों ने एक दूसरे को देखा, और उसने कहा, अच्छा, ठीक है, उसने पूछा, वह कौन है जो कभी माँ से बात नहीं करता? और तीनों बच्चे एक दूसरे को शर्मिंदगी से देखते हैं, और फिर वह कहता है, कौन हमेशा वही करता है जो माँ कहती है? और तीनों बच्चे एक दूसरे को देखते हैं, और फिर वे सभी सिर हिलाते हैं, और फिर उनमें से एक अंत में कहता है, ठीक है, पिताजी, आपको वीडियो गेम मिल गया। हाँ। सम्मान बच्चों के लिए आज्ञाकारिता को दर्शाता है।

बच्चों को वही करना चाहिए जो उनके माता-पिता कहते हैं। और फिर, यह ऐसी बात है जिसे पुराने नियम में बहुत गंभीरता से लिया गया है। पुराने नियम के कानून के अनुसार, अवज्ञाकारी बच्चे को पत्थर मारकर मार डाला जा सकता था।

अब, क्या ऐसा अक्सर होता है? फिर से, मुझे इस पर संदेह है। पुराने नियम में ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं है कि हर बच्चे को पत्थर मारकर मार डाला गया हो। लेकिन खतरा तो था ही।

तुम्हें पता है, अगर बच्चा आदतन माँ-बाप से गाली-गलौज करता है, तो माँ-बाप बच्चे को शहर के बुजुर्गों के सामने लाकर कह सकते हैं, "मेरा यह बच्चा अवज्ञाकारी है। यह लगातार मुझसे गाली-गलौज करता है।" और फिर शहर के लोग बच्चे को पत्थर मारकर मार सकते हैं।

वाह. हाँ. हाँ.

यह बहुत कठोर लगता है। लेकिन फिर, उस समाज में, सम्मान जीवन से ज़्यादा महत्वपूर्ण था। और इसलिए जो बच्चा अवज्ञाकारी था और अपने माता-पिता को शर्मिंदा करता था, उसे न केवल अपने माता-पिता के लिए ख़तरा माना जाता था, बल्कि समाज के लिए भी ख़तरा माना जाता था।

आप जानते हैं, मैं फिर से, मुझे संदेह है कि यह कुछ ऐसा था जो बहुत बार किया जाता था, लेकिन मुझे यह भी संदेह है कि उन दिनों अवज्ञाकारी बच्चे आज की तुलना में बहुत दुर्लभ थे। लेकिन इस बारे में सोचते हुए भी, हमें यह पहचानना होगा कि पाँचवीं आज्ञा मुख्य रूप से बच्चों के लिए नहीं लिखी गई थी। पाँचवीं आज्ञा मुख्य रूप से वयस्कों से संबंधित थी और वयस्कों को अपने माता-पिता का सम्मान कैसे करना चाहिए।

और फिर, यह अपेक्षा थी कि वयस्क माता-पिता भी अपने माता-पिता के बजाय वयस्क बच्चों की बात मानेंगे। और हम देखते हैं कि ऐसा अक्सर होता है, हालाँकि माता-पिता के बड़े होने पर रिश्ते में एक तरह का बदलाव आता है। और बाइबल की कुछ कहानियों में, मुझे लगता है कि सबसे बड़े बच्चों के बीच सहयोग की भावना अधिक होती है।

लेकिन आम तौर पर, घर का सबसे बड़ा सदस्य, कुलपिता, आम तौर पर, आप जानते हैं, घर में सबसे सम्माननीय व्यक्ति माना जाता था। और उन्हें सम्मानित किया जा रहा था, इसका मतलब यह भी था कि वे जो कहते थे वह कानून था। ऐसा लगता है कि बुजुर्गों में उस शक्ति का इस्तेमाल थोड़ा कम करने की प्रवृत्ति थी।

आप जानते हैं, यह समझदारी होगी कि आप अपने बच्चों को अपने फैसले खुद लेने दें और उन्हें अपनी तरह की ज़िंदगी जीने दें। लेकिन कभी-कभी, सैद्धांतिक रूप से, कम से कम, ऐसा लगता है कि सबसे बड़ा, कुलपिता, पूरे परिवार में अपना दबदबा बना सकता है और कह सकता है, मैं यही चाहता हूँ कि ऐसा किया जाए। और अगर बच्चे मना कर दें, तो वे उन्हें शहर के बुजुर्गों के सामने ला सकते हैं और उन्हें पत्थर मारकर मार सकते हैं।

तो, आज्ञाकारिता इसका एक हिस्सा है। समर्थन निश्चित रूप से इसका एक और हिस्सा है। और यह उन तरीकों पर वापस जाता है जिनसे परिवारों की संरचना की गई थी, और जिस तरह से धन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किया गया था।

और यह एक आंकड़ा है नए नियम में वास्तव में प्रमुखता से उल्लेख किया गया है। यीशु ने उन लोगों के लिए बहुत कठोर शब्द कहे थे जिन्होंने पाँचवीं आज्ञा का उल्लंघन करने की कोशिश की थी। यीशु ने उत्तर दिया, तुम अपनी परंपरा के लिए परमेश्वर की आज्ञा क्यों तोड़ते हो? परमेश्वर ने कहा, अपने पिता और माता का आदर करो।

और जो कोई अपने पिता या माता को कोसता है, वह अवश्य मार डाला जाए। परन्तु तुम कहते हो कि यदि कोई यह कहे कि जो कुछ उसके पिता या माता की सहायता के लिए उपयोग किया जा सकता था, वह परमेश्वर को समर्पित है, तो उसे उसके द्वारा अपने पिता या माता का आदर नहीं करना चाहिए। इस प्रकार तुम अपनी परम्परा के कारण परमेश्वर के वचन को व्यर्थ कर देते हो।

हे कपटियों, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यवाणी ठीक ही की थी, कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है। ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं।

उनकी शिक्षाएँ केवल मानवीय नियम हैं। तो, यीशु यहाँ किस बारे में बात कर रहे हैं? अब, यह एक कानूनी, आप इसे एक बचाव का रास्ता कह सकते हैं, जिसका फ़रीसी लोगों ने फ़ायदा उठाया और बाद में यहूदी परंपरा में इसका काफ़ी महत्व रहा। और इसलिए हम इस बारे में बहुत कुछ जान सकते हैं, सिर्फ़ तल्मूड, यहूदी पवित्र पुस्तकों पर मिशनाह में जो कुछ हम पढ़ते हैं, उससे।

तो आम तौर पर, आप जानते हैं, उन दिनों परिवार जिस तरह से काम करता था, मैं उड़ाऊ बेटे की कहानी के बारे में सोचता हूँ, आप जानते हैं, पिता के दो बेटे हैं, बेटा एक छोटे बेटे के पास आता है और कहता है, पिताजी, मुझे वह विरासत दे दीजिए जो मुझे मिलनी चाहिए। माता-पिता के लिए अपने बच्चों को उनकी विरासत देना असामान्य नहीं था, जबकि बच्चे अभी भी जीवित थे। ठीक है।

दोगुना हिस्सा मिलेगा हिस्सा, छोटे बच्चों को मिलने वाले पैसे का दोगुना। अगर आपके चार बेटे हैं, तो आपके सबसे बड़े बेटे को बाकी दो बेटों से दोगुना मिलता है। आप इसे चार भागों में बाँटते हैं, आपके चार बेटे हैं, आप इसे पाँच भागों में बाँटते हैं, आप सबसे बड़े बेटे को दोगुना हिस्सा देते हैं, आप जानते हैं, और फिर बाकी बच्चों को भी एक-एक हिस्सा मिलता है।

बेटियाँ, उन्हें आमतौर पर इसमें शामिल नहीं किया जाता था। इसीलिए अय्यूब की किताब के अंत में लिखा है कि अय्यूब ने अपनी बेटियों को भी इसमें शामिल किया और उन्हें विरासत दी क्योंकि ऐसा करना आम बात नहीं थी। आमतौर पर, बेटियों से अपेक्षा की जाती थी कि उनका भरण-पोषण उनके पतियों द्वारा किया जाए।

लेकिन वैसे भी, मान लीजिए कि आप अपने पैसे को आपस में बांट लेते हैं और सारा पैसा अपने बेटों को दे देते हैं। आप किस पर गुजारा करेंगे? खैर, फिर बच्चे अपने माता-पिता का भरण-पोषण करते हैं। और जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो यह एक प्यारी सी बात है, क्योंकि आप बच्चों को उस समय पैसे दे रहे हैं जब उन्हें इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है, जब वे जीवन में आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं और वे व्यवसाय शुरू करने और परिवार पालने की कोशिश कर रहे हैं।

इसलिए आप उन्हें उनकी विरासत देते हैं, और फिर वे उस पैसे का इस्तेमाल आपके बुढ़ापे में आपकी मदद करने के लिए करते हैं। यह अपने तरीके से एक सुंदर व्यवस्था थी, लेकिन दुर्भाग्य से, यह एक ऐसी व्यवस्था थी जो दुरुपयोग के लिए तैयार थी। और दुरुपयोग जो कानूनी रूप से स्वीकृत हो सकता था।

तो हुआ यह कि फरीसी इस नीति के साथ आए जो वास्तव में तल्मूड में लिखी गई थी कि कोई व्यक्ति अपने माता-पिता से प्राप्त धन को कोरबन घोषित कर सकता है। कोरबन, इसका क्या

मतलब है? कोरबन हिब्रू क्रिया से आया है, जिसका अर्थ है प्रस्तुत करना या पास लाना। कोरबन का अर्थ है समर्पित, ईश्वर के प्रति समर्पित।

और इसलिए वे कुछ ऐसा कहते थे कि, ओह, यह संपत्ति कुर्बान है। यह भगवान को समर्पित है। इसे मत छुओ।

इज़राइल में कब्रों की खुदाई की गई है, जहाँ उन्हें पता चला है कि कब्र में कुछ नोट रखे गए हैं, जिसमें लिखा है कि, इस कब्र में जो कुछ भी मूल्यवान हो सकता है, उसे कुर्बान माना जाएगा। इसे मत छुओ क्योंकि अगर तुम ऐसा करोगे तो भगवान तुम्हें पकड़ लेंगे। तो यहाँ बताया गया है कि वे अपने माता-पिता का समर्थन करने के लिए इसका उपयोग कैसे करते हैं।

इसलिए पिताजी जूनियर को अपनी विरासत देते हैं। और जूनियर पिताजी से कहता है, ओह, पिताजी, आपने मुझे जो भी पैसा दिया था, वह अब भगवान को समर्पित है। यह कुर्बान है।

और अगले 30 सालों तक, हाँ, अगले 30 सालों तक वह पैसा कुर्बान रहेगा। खैर, ज़ाहिर है, उस समय तक, पिताजी मर चुके होंगे। और इसलिए माता-पिता के पास कोई सहारा नहीं बचेगा, जबकि बच्चा इस पैसे पर बैठा रहेगा, शायद इसे बैंक में जमा कर देगा, इसे बढ़ने देगा।

के संबंध में इसे सिर्फ़ कुर्बान भी घोषित कर सकते थे। जैसे कि अगर आपको अपना दामाद पसंद नहीं है, तो आप अपनी बेटी को कुछ पैसे दे सकते थे और उसे बता सकते थे कि दामाद के संबंध में यह कुर्बान है। आपको लोगों के थोड़े अंधविश्वासी होने पर निर्भर रहना पड़ता था, या शायद हम इसे धार्मिक कह सकते हैं, लेकिन मैं इसे अंधविश्वास कहता हूँ, आप जानते हैं, यह सोचना कि अगर वे वास्तव में यह सामान लेते हैं तो भगवान उन्हें पकड़ लेंगे।

लेकिन जाहिर है कि यह काफी आम प्रथा थी, और तल्मूड में इसे एक पवित्र काम के रूप में समर्थन दिया गया था, अपने माता-पिता को सहायता से वंचित करना। और यही बात यीशु को बहुत क्रोधित करती थी। वह कहते हैं, अपने रीति-रिवाजों को पूरा करने के लिए परमेश्वर की आज्ञाओं को दरकिनार करना तुम्हारे लिए एक बढ़िया तरीका है।

तो, हाँ। लालची बच्चे अब एक तरह से धर्मपरायणता के लिए अपने लालच को छिपा सकते हैं। जाहिर है, नए नियम के समय में, माता-पिता के साथ उचित सम्मान के साथ व्यवहार करने के विचार को झटका लग रहा था।

और, बेशक, यह हमारे समय में भी जारी है। मुझे लगता है कि भावनात्मक समर्थन यहाँ आज्ञा का एक और हिस्सा है जो उन लोगों से अपेक्षित है जो अपने माता-पिता का सम्मान करेंगे। यह एक मुश्किल काम हो सकता है।

आप जानते हैं, पाँचवीं आज्ञा बच्चों के लिए, उनके माता-पिता की आज्ञा मानने के बारे में है, यहाँ तक कि वयस्कों के लिए भी, शायद, कुछ हद तक अपने माता-पिता की आज्ञा मानना, उनके साथ उचित सम्मान से पेश आना, उनकी शारीरिक ज़रूरतों को पूरा करना। लेकिन साथ ही, एक और चीज़ जिसकी हम सराहना करने लगे हैं, बेशक, हमारे समय में बहुत ज़्यादा, उन्हें

भावनात्मक समर्थन देना जिसकी उन्हें ज़रूरत है। आज, लोग पहले से कहीं ज़्यादा लंबे समय तक जी रहे हैं, और इसलिए यह हमारे समाज में बहुत महत्वपूर्ण है, जो आज इतना गतिशील है, कि लोग अपने बुजुर्गों, अपने माता-पिता के लिए उस तरह मौजूद नहीं हैं, जिस तरह वे पिछली पीढ़ियों में होते थे।

कई बार हम अपने माता-पिता को अजनबियों के हवाले करने को तैयार रहते हैं और उनकी देखभाल ऐसे लोगों को सौंप देते हैं जो उन्हें वास्तव में नहीं जानते। अब, कभी-कभी, बेशक, यही सबसे ज़्यादा प्यार भरी बात है जो हम कर सकते हैं। कभी-कभी, हमारे माता-पिता की ऐसी ज़रूरतें होती हैं जिन्हें पूरा करने के लिए हमारे पास शारीरिक, वित्तीय या भावनात्मक संसाधन नहीं होते हैं।

मैं मदद की ज़रूरत होगी। लेकिन ऐसी परिस्थितियों में भी, हम उनकी मदद करके और खुद को उन परिस्थितियों में रखकर, एक तरह से उनका सम्मान कर सकते हैं। लेकिन हमें भावनात्मक समर्थन की ज़रूरत को नहीं भूलना चाहिए।

यहाँ यह संख्या, मैंने इन आँकड़ों को बहुत ही बेतरतीब ढंग से देखा है, लेकिन ऐसा लगता है कि मैंने जो सबसे विश्वसनीय आँकड़े देखे हैं, उनमें से एक यह है कि नर्सिंग होम के 40% निवासियों को परिवार के आगंतुक नहीं मिलते हैं। और जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो यह बहुत भयावह लगता है। कुछ अध्ययनों में कहा गया है कि औसत बच्चा नर्सिंग होम में साल में दो बार अपने माता-पिता से मिलने जाता है।

औसत। अब, जाहिर है, कुछ लोग हैं जो दूसरों की तुलना में बहुत अधिक प्रतिबद्ध हैं। मैं कई लोगों को जानता हूँ जो हर हफ्ते अपने माता-पिता से मिलने जाते हैं, कभी-कभी हफ्ते में दो या तीन बार।

लेकिन कई अन्य लोगों की बहुत उपेक्षा की गई है। नर्सिंग होम के 30 से 45% निवासी किसी न किसी तरह के अवसाद से पीड़ित हैं, अक्सर अकेलेपन के कारण। लेकिन मुझे याद है, कई साल पहले, जब मैं एक युवा पादरी था, और जब मैं कुछ नर्सिंग होम का दौरा करता था, और मैं एक बार एक सुविधा में आया, और यह डिमेंशिया वार्ड में था, और जब मैं हॉल से नीचे जाने लगा, तो दालान में व्हीलचेयर पर एक महिला बैठी थी, और जब मैं आगे बढ़ा तो उसने मेरा हाथ पकड़ लिया, और मैंने उसे देखकर मुस्कुराया, और उसने कहा, क्या तुम मेरे बेटे हो? क्या तुम, क्या तुम मेरे जाँय हो? और मैंने कहा, नहीं, मैडम।

मैंने कहा, मैं एक पादरी हूँ। और मैंने उसके साथ प्रार्थना करने की पेशकश की, और वह बस दूर चली गई और उसके बाद कोई जवाब भी नहीं दिया। और मैंने एक नर्स से इसके बारे में पूछा, और नर्स ने कहा, उसका बेटा कभी यहाँ नहीं आया।

वह जितने समय तक वहाँ काम करती रही। जाहिर है, यह हमारे माता-पिता का सम्मान नहीं है। यह आज हमारे समाज की एक दिल दहला देने वाली सच्चाई है।

हमें उन संबंधों को बनाए रखने की ज़रूरत है। हमें उन्हें वह समर्थन और सम्मान प्रदान करने की ज़रूरत है जिसकी उन्हें ज़रूरत है। यही तरीका है, मेरा मतलब है, इसलिए यह हमारे माता-पिता का सम्मान करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है।

अपने माता-पिता का सम्मान करने का एक और महत्वपूर्ण तरीका है उनकी परंपराओं को संरक्षित करना और उन्हें आगे बढ़ाना। यह कुछ ऐसा था जिसे प्राचीन समय में बहुत महत्व दिया जाता था, और आज भी कई पारंपरिक समाजों में। यह विचार कि हम, कि हम उन्हें, ज्ञान, ज्ञान को आगे बढ़ाते हैं, बेशक, आप जानते हैं, शास्त्रों में, माता-पिता से कहा गया है कि उनकी जिम्मेदारी है कि वे बच्चों को ईश्वर के नियमों और परंपराओं के बारे में सिखाएँ, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ईश्वर के महान कार्यों को सुनाएँ।

कभी-कभी, बेशक, माता-पिता उस जिम्मेदारी में विफल हो जाते हैं। कभी-कभी बच्चे बस इसे सुनना नहीं चाहते। कभी-कभी, और हमारे समय में तेजी से, युवा लोग अपने माता-पिता के मूल्यों और परंपराओं को अस्वीकार कर रहे हैं।

जाहिर है, ये सभी मूल्य और परंपराएँ अच्छी नहीं हैं। कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें हमें अस्वीकार कर देना चाहिए। लेकिन दूसरी ओर, ऐसी कई चीज़ें हैं जिन्हें संरक्षित किया जाना चाहिए और आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

और ऐसा करके हम उन लोगों का सम्मान करते हैं जो हमसे पहले आए हैं। हम उनकी बुद्धिमत्ता का सम्मान करते हैं। हम उनके अनुभवों को स्वीकार करते हैं।

और यह हमें उस प्रश्न पर ले आता है, उस चेतावनी पर, जिसे आप जानते हैं, जिसे पॉल वादा कहता है। यह किस बारे में है? यदि आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आपको अपनी भूमि से बाहर निकाल दिया जा सकता है। खैर, यह पाप, हमारे माता-पिता का सम्मान न करने का पाप, उन भविष्यवाणियों के लेखों में कम जोर दिया जाता है जहाँ वे बात करते हैं कि कैसे लोग केवल प्रभु, अपने परमेश्वर की आराधना करने में विफल रहे हैं।

शायद इसीलिए यहाँ इस पर विशेष जोर दिया गया है। शायद इसीलिए इसे आज्ञाओं की इस विशेष सूची में अलग से रखा गया है। व्यक्तिगत रूप से कहें तो, हम देख सकते हैं कि अपने माता-पिता का अपमान करने पर उसे जीवित लोगों की दुनिया से निकाल दिया जा सकता है, आप जानते हैं, कि जो लोग अपने माता-पिता का सम्मान करने से इनकार करते हैं, उन्हें जीवन से निकाल दिया जा सकता है, ठीक है, अगर कोई उन आज्ञाओं को गंभीरता से लेता है कि जो बच्चा अपने माता-पिता का अपमान करता है, उसे पत्थर मारकर मार दिया जाएगा, तो निश्चित रूप से उसका जीवनकाल काट दिया जाएगा।

और यह एक तरीका है जिससे उन्हें देश से हटाया जा सकता है। लेकिन एक और तरीका है निर्वासन द्वारा देश से निकाले गए लोगों को सामूहिक रूप से हटाना। हम यहाँ नूह के बेटे हाम का उदाहरण ले सकते हैं।

मुझे लगता है कि यह एक तरह का उपयुक्त उदाहरण है। आपको वह कहानी याद होगी कि नूह अपने पूरे परिवार के साथ जहाज से बाहर आया और उसने एक अंगूर का बाग लगाया और वह एक किसान बन गया और उसने अपने लगाए अंगूरों से खुद के लिए कुछ शराब बनाई और फिर उसने अपनी शराब पी और वह बहुत नशे में हो गया और वह अपने तंबू के अंदर नंगा लेटा हुआ था। और उसका बेटा हाम आता है और तंबू में देखता है और देखता है कि पिताजी वहाँ नंगा लेटे हुए हैं।

ठीक है, अब तक कोई नुकसान नहीं हुआ, कोई बेईमानी नहीं हुई, आप जानते हैं, उसने गलती की। लेकिन फिर वह बाहर जाता है और अपने भाइयों से कहता है, अरे, अंदाज़ा लगाओ, दोस्तों? पिताजी तंबू में लेटे हुए हैं और वे नंगे हैं। यह बुरा था।

यह बहुत बुरा था क्योंकि वह अपने पिता को सार्वजनिक रूप से बदनाम कर रहा था। पारंपरिक समाज में यह अपेक्षा की जाती थी कि बड़ों को युवा लोग नग्न अवस्था में न देखें।

यह बिलकुल भी उचित नहीं है। यह वर्जित है। आज भी, एक बार मैं स्नातक कक्षा में पढ़ा रहा था, और मैं इस कहानी के बारे में बात कर रहा था।

और बहुत से लोगों के पास इस बात के लिए बहुत ही रोचक व्याख्याएँ हैं कि इसे इतना गंभीर क्यों माना गया। उनमें से एक प्रसिद्ध व्याख्या यह है कि हैम ने अपने पिता के साथ समलैंगिकतापूर्ण छेड़छाड़ करने की कोशिश की थी। नहीं, चलो।

बाइबल हमें ऐसी बातों के बारे में बताने से नहीं कतराती। लेकिन नहीं, ऐसा नहीं है। अफ्रीका से आए इस स्नातक छात्र ने मुझे बताया कि उसके गांव में आज भी युवाओं को बुजुर्गों को नग्न देखने की अनुमति नहीं है।

और उनके मरने के बाद भी, केवल दूसरे बुजुर्गों को ही शवों को दफ़नाने के लिए तैयार करने की अनुमति दी जाती थी। किसी युवा व्यक्ति के लिए किसी बुजुर्ग व्यक्ति को नग्न देखना उसके लिए शर्म की बात मानी जाती थी। इसलिए, अगर हैम ने बस अपनी नज़रें फेर ली होतीं, बाहर निकल जाता और अपना मुँह बंद रखता, तो शायद सब कुछ ठीक हो जाता।

लेकिन नहीं, उसे जाकर अपने भाइयों को इसके बारे में बताना होगा। और जब नूह जागता है और उसे पता चलता है कि क्या हुआ है, तो वह हाम की संतानों को शाप देता है और कहता है कि वे भूमिहीन हो जाएँगे। वे अपने भाइयों के सेवक होंगे, और अनिवार्य रूप से, उन्हें बेदखल कर दिया जाएगा क्योंकि उन्होंने अपने माता-पिता को शर्मिंदा किया है।

तो हाँ, यह कुछ ऐसा है जो शायद उन लोगों के दिमाग में रहा होगा जिन्होंने दस आज्ञाओं को अंतिम रूप दिया, वह शर्मिंदगी जो निर्वासन की ओर ले जा सकती है। जो लोग अपने माता-पिता का अपमान करते हैं, वे अपने वंशानुगत मूल्यों को आगे बढ़ाने में विफल रहते हैं। आप जानते हैं, ओह हाँ, माँ और पिताजी मेथोडिस्ट थे, लेकिन हमने कभी भी अपने बच्चों पर यह थोपा नहीं था।

आप जानते हैं, वे मूल्यों को आगे बढ़ाने में विफल हो रहे हैं। वे अधर्म के प्रसार, अपनी विरासत के जब्त होने की ओर ले जा रहे हैं, और अंततः यह समाज के टूटने और लोगों पर ईश्वर के न्याय की ओर ले जाता है। और आप जानते हैं, क्या इस तरह का विचार अभी भी हम पर लागू होता है? और विशेष रूप से चेतावनी, आप जानते हैं, पॉल ने इसे नए नियम में उठाया क्योंकि उन्हें लगा कि किसी तरह यह अभी भी प्रासंगिक है।

किसी कारण से, पॉल ने सोचा कि यह प्रासंगिक था कि पिता और माता का सम्मान करने की इस आज्ञा में यह धारणा जुड़ी हुई है कि यदि आप देश में रहना चाहते हैं, तो आपको अपने माता-पिता का सम्मान करना होगा। और आपको आश्चर्य होगा, समाजशास्त्रीय रूप से बोलते हुए, मुझे निश्चित रूप से पता है कि दस आज्ञाएँ आधुनिक अमेरिका के लिए नहीं लिखी गई थीं, लेकिन आपको समाजशास्त्रीय रूप से आश्चर्य करना होगा कि एक संस्कृति जो अपनी परंपराओं को भूल जाती है, एक संस्कृति जो अपने आधार खो देती है, और एक संस्कृति जो अपने बुजुर्गों का अपमान करती है, वह कुछ मायनों में भगवान की नाक में विशेष रूप से घृणित होनी चाहिए। और आपको आश्चर्य करना होगा कि यह कितना आगे जा सकता है, हम कितना आगे बढ़ सकते हैं, युवा पीढ़ी कितनी अधिक सुनिश्चित हो सकती है कि वे पहले आए किसी भी व्यक्ति से अधिक चतुर हैं।

न्याय की कुल्हाड़ी गिरने से पहले यह कब तक चल सकता है? मुझे लगता है कि यह एक चेतावनी है, और मुझे लगता है कि आज हमारे लिए भी चेतावनी की कुछ प्रासंगिकता है, कि हमें यह याद रखने की ज़रूरत है कि बुजुर्ग सिर्फ पुराने लोग नहीं हैं जिन्हें किनारे कर दिया जा सकता है। आज समाज में उन्हें जिस तरह से अक्सर चित्रित किया जाता है, उसके बावजूद वे हमारे लिए शर्मिंदगी की बात नहीं हैं, उन्हें वह सम्मान दिया जाना चाहिए जिसके वे हकदार हैं, जिन्होंने मेहनत की है, जिन्होंने अनुभव किया है, जिनके पास साझा करने के लिए ज्ञान है, अगर कोई सुनने को तैयार है।

यह डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो और दस आज्ञाओं पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 6, आज्ञा 5, माता-पिता को उनके स्थान पर रखना है।